४५८४

॥ अथ जैन थोयो (जिनस्तुति) संग्रह प्रारंभः ॥



॥ अथ सीमंधर जिन स्तुति लिख्यते ॥

श्री सीमंधर मुजनेवाला, आज सफल सुविहाणुंजी ॥ त्रिगडे तेजें तपता जिनवर, मुज तुठा हुं जाणुंजी ॥ केवल कमला केलिकरंतो, कुलमंडण कुल दीवोजी ॥ लाख चोरासी पूरव आयु, रुक्मिणी वर घणुं जीवोजी ॥ १ ॥ संपतिकाले वीश तीर्थंकर, उदया अभिनव चंदाजी ॥ केइ केवली केइ बालक परणया, केइ महीपति सुखकंदाजी ॥ श्री सीमंधर आदि अनोपम, महाविदेह खेत्रें जिणंदाजी ॥ सुरनर कोडा कोडी मिली वली, जोवे मुख अरविंदाजी ॥ २ ॥ सीमंधर मुख त्रिगडु जोवा, हुं अलजायो वाणीजी ॥ आडा डुंगर आवी नशकुं, वाट विषम अरु पाणीजी ॥ रंग भरि रागधरी पायलागुं, सूत्र अर्थ मन सारोजी ॥ अमृत रसथी अधिक वखाणी, जीवदया चित्तधारोजी ॥ ३ ॥ पंचांगुलीमें प्रत्यक्ष दीठी, हुं जाणुं जग माताजी ॥ पं

हेरण चरणा चोली पटोली, अधर बिराजे राताजी ॥ स्वर्ग भुवन सिंघासण बेठी, तुहिंज देवी विख्याताजी ॥ सीमंधर शासन रखवाली, शांति कुशल सुख दाता जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ ऋषभजिन स्तुति लिख्यते ॥

अति सुघट सुंदर, गुण पुरंदर, मंदररूप सुधीर ॥ घनकर्म कदली, दलन दंती, सिंधु सम गंभीर ॥ नाभिराय नंदन, वृषभ लंछन, ऋषभ जगदानंद ॥ श्री राजविजय, सुरिंद तेहना, वंदे पद अरविंद ॥ १ ॥ सुरनाथ सेवित, विबुध वंदित, विदित विश्वाधार ॥ दोय साम ला, दोय उजला, दोय निल वर्ण उदार ॥ जा सूल फूल, समान दोइ, शोले सोवन वान ॥ श्री राज विजय, सूरिराज अहो निश, धरे तेहनुं ध्यान ॥ २ ॥ अज्ञान महातम, रूप रजनी, वेगें विध्वंसण तास ॥ सिद्धांत शुद्ध, प्रबोध उदयो, दिनकर कोडी प्रकाश ॥ पद बंध शोभित, तत्त्व गर्भित, सूत्र पीस्तालीश ॥ अतिसरस तेहना, अर्थ प्रकाशे, श्री राजविजय सूरीश ॥ ॥ ३ ॥ गजगामिनी, अभिराम कामिनी, दा

मिनीसी देह ॥ सा कमल नयणी, विपुल वय णी, चक्केसरी गुण गेह ॥ श्री राजविजय, सुरिं दपाये नित्य नमती जेह ॥ कहे उदय रत्न वाजक, जैन शासन, विघ्ननिवारो तेह ॥ ४ ॥ इति

॥ अथ श्री शत्रुंजय स्तुति लिख्यते ॥

श्री शत्रुंजय मंडण आदिदेव, हुं अहोनिश सारूं तास सेव ॥ रायण तलें पगलां प्रभु त णां, पूजिश सकल फूल शोहामणां ॥ १ ॥ ते वीश तीर्थंकर समोसरया, विमलाचल उपर गु ण भरया ॥ गिरि कंभणें आया नेमनाथ, सो जिनवर मेलो मुक्ति साथ ॥ २ ॥ श्री सोहम स्वा मी उपदिश्या, जंबु गणधरने मन वश्या ॥ पुंड रिक गिरि माहिमा एह मांहि, हुं आगम सम रूं मन उच्छाहिं ॥ ३ ॥ चक्केसरी गोमुख कवड पक्ष, मनवंछित पूर्ण कल्पवृक्ष ॥ सिद्धक्षेत्र स हाई देवता, भणे नंद सूरि तुम पाय सेवता ॥ ४ ॥

॥ अथ श्री शांतिजिन स्तुति लिख्यते ॥

सकल सुखाकर, प्रणमित नागर, सागर प रे गंभीरोजी ॥ सुकृत लतावन, सींचन घनस म, भविजन मन तरू कीरोजी ॥ सुरनर किन्न

र, असुर विद्याधर, वंदित पद अरविंदजी ॥ शिवसुख कारण, शुन्न परिणामें, सेवो शांति जिणंदजी ॥ १ ॥ सयल जिनेसर, नुवन दिणेसर, अलवेसर अरिहंताजी ॥ नविजन कुमुद, संबोधन शशिसम, नयनंजन नगवंताजी ॥ अष्ट करम अरि, दल अति गंजन, रंजन मुनि जन चित्ताजी ॥ मन सुधें जे, जिननें आराधे, ते हने शिवसुख दित्ताजी ॥ २ ॥ सुविहित मुनि जन, मान सरोवर, सेवित राज मरालोजी ॥ कलिमल सकल, निवारण जलधर, निर्मल सूत्र रसालोजी ॥ आगम अकल, सुपद पदें शोन्नित, उंम्रा अर्थ अगाधोजी ॥ प्रवचन वचना, तणी जे रचना, नविजन नावें आराधोजी ॥३॥ विमल कमलदल, निर्मल लोयण, उल्लसित गेरें ललितांगीजी ॥ ब्रह्माणी, देवी निरवाणी, विघ्न हरण कणयंगीजी ॥ मुनिवर मेघ, रत्नपद अनुचर, अमर रत्न अनुन्नावेंजी ॥ निरवाणी देवी, प्रन्नावें, उदय सदा सुखपावेजी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री गिरनारजीनी स्तुति लिख्यते ॥

गिरनार गिरीश्वर वंदीयें, श्री नेमी निरखी

आणंदीयें ॥ आषाड शुदिअष्टमी मोक्ष जाण. सासय सुख पाम्यागुण निधान ॥ १ ॥ जिनवर चउवीशे वंदता, तेनो धर्म सुणि मन रंजता ॥ जिन आणा पाली धरी विवेक, भव्य जीव तरया तरशे अनेक ॥ २ ॥ आगम वाणी चित्त धारतां, अज्ञान तणां दुःख वारतां ॥ पंचम कालें एहीज आधार, ते वंदूं आगम जगत सार ॥ ३ ॥ तीरथ रक्षक जे सुरसुरी, तेह वंदूं आणंद मन धरी ॥ सुर भूप नमत सुख संपदा, सहु दूर हरे जग आपदा ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ नेमिजिन स्तुति लिख्यते ॥

श्रीगिरनारें जे गुण नीलो, ते तरण तारण त्रिभुवन तिलो ॥ नेमीसर नमियें ते सदा, सेव्यो आपे सुख संपदा ॥ १ ॥ इंद्रादिक देव जेहने नमे, दर्शन दीठे दुःख उपशमे ॥ जे अतीत अनागत वर्त्तमान, ते जिनवर वंदूं वरप्रधान ॥ २ ॥ अरिहंतें वाणी उच्चरी, गणधरें ते रचना करी ॥ पीस्तालीस आगम जाणीयें, अर्थ तेहना चित्ते आणीयें ॥ ३ ॥ गढ गिरनारनी अधिष्ठायिका, जिनशासननी रखवालिका ॥ समरुं

सा देवी अंबिका, कवि उदयरत्न सुखदाइका॥४॥

॥ अथ पंचमीनी स्तुति लिख्यते ॥

नेमि जिनेसर, प्रभु परमेसर, वंदो मन उल्लासजी ॥ श्रावण शुदि पंचमी दिन जनम्या, हुयो त्रिजग प्रकाशजी ॥ जनम महोत्सव करवा सुरपति, पांच रूपकरी आवेजी ॥ मेरु शिखर पर ओह्लव करीने, विबुध सयल सुख पावेजी ॥ १ ॥ श्री शत्रुंजय गिरनार वंदूं, कंचनगिरि वैभारजी ॥ समेतशिखर अष्टापद आबू. तारंगगिरिने जूहारजी ॥ श्री फल वर्द्धि पास मंडोवर, संखेसर प्रभु देवजी ॥ सयल तीरथनुं ध्यान धरीजें, अहनिश कीजें सेवजी ॥ २ ॥ वरदत्तने गुणमंजरी परबंध, नेमि जिनेसर दाख्योजी ॥ पंचमी तपकरतां सुख पाम्या, सूत्र सकलमांभा ख्योजी ॥ नमो नाणस्स इम गणणुं गणियें, विधि सहित तप कीजेंजी ॥ उलट धरी उजमणुं करतां, पंचमी गति सुख लीजेंजी ॥ ३ ॥ पंचमीनुं तप जे नर करशे, सान्निध्यकरे अंबाइजी ॥ दोलत दाइ अधिक सवाइ, देवी द्ये ठकुराइजी ॥ तपगछ अंबर दिनकर सरिखो, श्री विजय

नह सूरीशजी ॥ वीरविजय पंडित कविराजा, विबुध सदा सुजगीशजी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ सीमंधर जिन स्तुति लिख्यते ॥

सीमंदर स्वामी निर्मला, तुम ज्ञान उपनुं केवला ॥ सीमंधर स्वामी तार तार, मुज आवा गमन निवार वार ॥ १ ॥ सत्तरेशो जिनवर वंदीयें, जस नामें पाप निकंदीयें ॥ सांप्रत जिन सोहे वीश सार, ते नवियण वंदो वार वार॥२॥ जिनवाणी साकर सेलडी, पीतां जाणे अमृत वेलडी ॥ जिन आगम सागर सेवतां, लहो विद्या रयण सोहावता ॥ ३ ॥ सीमंधर जिनपद अनुसरी, श्री संघप्रत्यें बहु सुख करी॥कनका आसा शासन सूरि, द्यो वंछित देवी पतंजरी ॥ ४॥

॥ अथ श्री सिद्धाचलजीनी स्तुति लिख्यते ॥

आगें पूरव वार नवाणुं, आदिजिनेसर आयाजी ॥ शत्रुंजय लाभ अनंतो जाणी, वंदूं ते हना पायाजी ॥ जग बंधव जगतारण ए गिरि, दीठां दुर्गति वारेजी ॥ यात्रा करंता व्हारि पाले, काज पोतानां सारेजी ॥ १ ॥ शत्रुंजय अष्टापद नंदीसर, उज्वल अर्बुद आदेंजी ॥ सय

ल तीरथ ने समेत शिखरगिरि, सफल जन्म उ
वादेजी ॥ अतीत अनागत ने वर्त्तमानह, जि
नवर हुआ ने होसेजी ॥ जे जन तीर्थ इणी प
रें वांदे, तेहने शिवपद थासेजी ॥ २ ॥ सीमंध
रजिन सुरपति आगें, शत्रुंजय महिमा दाख्यो
जी ॥ वंदू आगम गणधर गुंथ्युं, जेणें ए तीर
थ नाख्योजी ॥ सिद्ध अनंता इणे गिरि हुआ,
धन आगम इम बोलेजी ॥ सकल तीरथमां रा
जा कहियें, नहीं कोइ शत्रुंजय तोलेजी ॥ ३ ॥
कवडयक्ष गौमुख चक्केसरी, शत्रुंजय सान्निध्य
कारीजी ॥ सकल मनोरथ संघनापूरे, वंछित स
मकित धारीजी ॥ श्री विमलाचल जग जयवंता,
सबल शक्ति तुमारीजी ॥ देजो देवा शत्रुंजय
सेवा, कार्यसिद्धि अमारीजी ॥ ४ ॥ इति

॥ अथ श्री शांतिजिन स्तुति लिख्यते ॥

श्री शांति जिणेसर समरियें, जेहनी अचि
रा माय ॥ विश्वसेन कुल उपना, मृगलंछन पा
य ॥ गजपुर नयरीनो धणी, सोवन वर्णी का
य ॥ धनुष चालिश जस देहनी. वरष लाखनुं
आय ॥ १ ॥ शांति जिनेसर सोलमा, चक्री पं

चम जाणुं ॥ कुंथुनाथ चक्री छठ्ठा, अरनाथ व
खाणुं ॥ ए त्रणे चक्री सही, देखी आणंदूं ॥ सं
जम लेइ मुगतें गया, नित्य उठी वंदूं ॥ २ ॥
शांति जिनेसर केवली, बेठा धर्म प्रकाशे ॥ दा
न शील तप भावना, नरसोहे अभ्यासे ॥ एह
वचन जिनजी तणां, जिणे हियडे धरियां ॥ सु
णतां शिव गति निर्मली, दीसे केवल वरिया ॥
॥ ३ ॥ समेत शिखर गिरिउपरें, जइने अणस
ण कीधुं ॥ काउस्सग्ग मुद्रायें रह्या, तिणें मुग
तिज लीधुं ॥ गरुड यक्ष समरुं सदा, देवी नि
र्वाणी ॥ भविक जीव तुमें सांभलो, रिषभ
दासनी वाणी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ सीमंधर प्रमुख विस जिननी स्तुति ॥

श्री सीमंधर सेवित सुरवर, जिनवर जग ज
यकारीजी ॥ धनुष्य पांचशें कंचन वरणी, मूर
ति मोहन गारीजी ॥ विचरताप्रभु माहाविदेहें,
भवि जिनने हितकारीजी ॥ प्रह उठी नित्य ना
म जपीजें, हृदय कमलमां धारीजी ॥ १ ॥ सी
मंधर युग बाहु सुबाहु, सुजात स्वयंप्रभ नामजी
॥ अनंत सूर विशाल वज्रंधर, चंद्रानन अभि

रामजी ॥ चंद्र भुजंग इश्वर नेमिप्रभ, वीरसेन गुणधामजी ॥ महाभद्रने देवयशा वली, अजित करुं प्रणामजी ॥ २ ॥ प्रभु मुखवाणी बहुगुण खाणी, मीठी अमीय समाणीजी ॥ सूत्र अने अर्थे गुंथाणी, गणधरथी धीर वाणीजी ॥ केवलनाणी बीज वखाणी, शिवपुरनी नीशाणीजी ॥ उलट आणी दिलमांहे जाणी, व्रत करो भ विप्राणीजी॥३॥ पहेरी पटोली चरणां चोली, चाली चाल मरालीजी॥अतिरूपाली अधर प्रवाली, आंखडली अणीआलाजी ॥ विघ्ननिवारी साह्यकारी, शाशननी रखवालीजी ॥ धीरविमल कविरायनो सेवक, बोले नय निहालीजी ॥ ४ ॥

॥ अथ अर जिन स्तुति लिख्यते ॥

(द्रुतविलंबित छंद) ॥ अरजिननाथ सुसाधु सुरे सुरा, नमि नरेसर खेचर भूचरा ॥ गणि विराजित जेह जिनेश्वरा, भुजग किन्नर सेवित भूधरा ॥ १ ॥ दोष अष्टादश दलितजे दुर्धरा, जगत पावन सर्व तीर्थंकरा ॥ मदन भंजन गंजन जे जरा, अनंत तेह नमो अजरामरा ॥ ॥ २ ॥ विश्व प्रकाशक केवल भाषिता, दुर्गति

पंथ पडे तस राखिता ॥ तेह पीस्तालीश सूत्र संभारियें, दुरित पडल दूरें जिम वारियें ॥ ३ ॥ पीन पयोधर धारनी धारणी, विघ्न शासन वार निवारणी ॥ परम उदय पद संपद कारणी: मंगल वेल जे सिंचन सारणी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री गिरनारजीनी स्तुति लिख्यते ॥

सुर असुर वंदिय पाय पंकज. मयणवल्लि अखोभितं ॥ घन सुघन श्याम शरीर सुंदर. शंख लंछन शोभितं ॥ शेवादेवी नंदन त्रिजग वंदन. भविक कमल दिनेसरं ॥ गिरनार गिरिवर शिखर वंदूं. श्री नेमिनाथ जिनेश्वरं ॥ ॥ १ ॥ अष्टापदे श्री आदि जिनवर. वीर पावा पुरिवरे ॥ वासु पूज्य चंपा नयर सिद्धा. नेम रेवा गिरिवरे ॥ समेत शिखरें वीश जिनवर. मुक्ति पोहोता मनहरू ॥ चोवीश जिनवर तेह वंदूं. सयल संघ सुख करू ॥ २ ॥ इग्यारे अंग उपंग बारे. दश पयन्ना जाणीयें ॥ छछेद ग्रंथ पसथ्थ हथ्था. चार मूल वखाणियें ॥ अनुयोगद्वार उदार नंदी. सूत्र जिनमत गाईयें ॥ यह वृत्ति चूर्णि सूत्र पेंतालीस, आगम ए मन

ध्याइयें ॥ ३ ॥ बिहुं दिशे बाला दोय जेहने. सदा नवियण सुख करू ॥ दुःख हरिय अंबा लुंब सुंदर. दुरिय दोहग अपहरू ॥ गिरनार मंफण नेम जिनवर. चरण पंकज सेंविया॥श्री संघ सुप्रसन्न सदा मंगल. करो आंबिका देविया ॥ ४ ॥

॥ अथ आदि जिन स्तुति लिख्यते ॥

आदि जिनवर राया जास सोवन्न काया, मरू देवी जसमाया धोरी लंबन पाया ॥ जगत स्थिति निपाया शुद्ध चारित्र पाया, केवल सिरिराया मोक्ष नगरें सिधाया ॥ १ ॥ सविजन सुख कारी मोह मिथ्या निवारी, दुरगति दुःख नारी शोक संताप वारी॥श्रेणि क्षपक सुधारी.केवलानंत धारी,नमियें नरनारी जेह विश्वोपकारी॥२॥ समवसरण बेठा लागे जे जिन मीठा, करे गणप पईठा इंद्र चंद्रादि दिठा ॥ द्वादशांगी वरिठा गुंथता टाले रिठा, नविजन होय हिठा देखी पुएयें गारिठा ॥ ३ ॥ सुर समकित वंता जेह ऋद्धे महंता, जेह सुजन संता टालियें मुफ चिंता॥ जिनवर सेवंता विघ्न वारे दुरंता. जिन उत्तम थुणंता पद्मनें सुख दिंता ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री शांतिजिन स्तुति लिख्यते ॥

गजपुर अवतारा, विश्वसेन कुमारा ॥ अव
नितलें उदारा, ॥ चक्र विलच्छी धारा ॥ प्रतिदि
वस सवाया, सेवियें शांतिसारा, नवजलधि अ
पारा, पामीयें जेम पारा ॥ १ ॥ जिनगुण जस
मल्लि, वासना विश्व वल्लि ॥ मन सदन वसल्लि,
मानवंती निसल्लि ॥ सकल कुशल वल्लि, फूलडे
वेगफूल्ली ॥ दुरगति तस दूल्लि, ता सदा श्री ब
हूली ॥ २ ॥ जिनकथित विशाला, सूत्रश्रेणी
रसाला ॥ सकलसुख सुखाला, मेलवा मुक्तिबा
ला ॥ प्रवचनपद माला, दूतिकाएं दयाला ॥ उ
रधरी सुकमाला, मूकीयें मोहजाला ॥ ३ ॥
अति चपल वखाणी, सूत्रमांजे प्रमाणी ॥ नग
वति ब्रह्माणी, विघ्नहंता निर्वाणी ॥ जिनपद ल
पटाणी, कोडी कल्याण खाणी ॥ उदय रतनें
जाणी, सुखदाता सयाणी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ मौन एकादशी स्तुति लिख्यते ॥

नेमीसरने श्री नारायण, प्रश्न करे पाय वं
दीजी ॥ सकल पर्वमां जेह महाफल, ते मुज क
हो आणंदीजी ॥ जिन कहेजे एक मौन एकाद

शी, वर्षो वर्ष आराधेजी ॥ चउविहार उपवास पोसहशुं, ते शिव संपद साधेजी ॥ १ ॥ दश खेत्रे पांच पांच कल्याणक, सर्व मिली पचाशजी ॥ त्रिहुं कालें ते त्रिगुणा करतां, थाये दोढशो विलासजी ॥ मीगशर शुदि एकादशीने दिने, ते जपमालि गणियेंजी ॥ संपद सघली सन्मुख थाये, आपद सवि अव गणियेंजी ॥ ॥ २ ॥ प्रतिमा ज्ञान पूजा उपगरणां, प्रत्येकें इगीआरजी ॥ फल पक्वान्न मेवाबहु ढोवा, सामी वत्सल सारजी ॥ गुरुवचनें इम मौन एकादशी, उजमणुं जे करशेजी ॥ सुव्रत श्रेष्टी तणीपरें ते नर, शिवकमला सुख वरशेजी ॥ ३॥ देवदेवी जे सम्यक् दृष्टि, शासन सान्निध्य कारीजी ॥ संघना सकल समीहित पूरो, दोहग दुःख निवारीजी॥एकादशी तप आराधकने, मन कामित सुख आपोजी॥हंस कहे श्री जिन आणामां, मन नवि थिरकरी थापोजी ॥ ४ ॥

॥ अथ श्री शत्रुंजय स्तुति लिख्यते ॥

श्री शत्रुंजय गिरि तीरथ सार, गिरिवर मांहें जेम मेरू उदार, ठाकुर राम अपार ॥ मंत्र

मांहे नवकारज जाणुं, तारा मांहे जेम चंद्र व
खाणुं, जलधर मांहे जल जाणुं ॥ पंखी मांहे
जेम उत्तम हंस, कुल मांहे जेम ऋषभनो वंश,
नाभि तणो जे अंश ॥ क्षमावंत मांहे जेम अ-
रिहंता, तप शूरा मुनिवर महंता, शत्रुंजय गि
रि गुणवंता ॥ १ ॥ ऋषभ अजित संभव अ
भिनंदा, सुमतिनाथ मुख पूनम चंदा, पद्म प्र
भ सुखकंदा ॥ श्री सुपार्श्व चंद्रप्रभ सुविधि,
शीतल श्रेयांस सेवो बहु बुद्धि, वासुपूज्य मति
शुद्धि ॥ विमल अनंत जिन धर्म ए शांति, कुंथु
अर मल्लि नमुं ए कंति,मुनि सुव्रत शुद्ध पंथि॥नमी
पासने वीर चोवीश,नेम विना ए जिन त्रेवीश, सि
द्ध गिरि आव्या इश॥२॥ भरतराय जिन साथें बो
ले, स्वामी शत्रुंजय गिरि कुण तोले, जिननुं व
चन अमोले ॥ ऋषभ कहे सुणो भरतराय, छ
हरी पालंता जे नरजाय, पातक भूको थाय ॥
पशु पंखी जें इण गिरि आवे, भव त्रीजे ते सि
द्धज थावे, अजरामर पद पावे ॥ जिन मतमें
शत्रुंजो वखाण्यो, ते में आगम दिल मांहे आ
ण्यो, सुणतां सुख उर आण्यो ॥ ३ ॥ संघ प

ति भरत नरेसर आवे, सोवन तणां प्रासाद करावे, मणिमय मूरति ठावे ॥ नाभिराया मरू देवी माता, ब्राह्मी सुंदरी बेहेन विख्याता, मू र्ति नवाणुं भ्राता ॥ गोमुखने चक्केसरी देवी, श त्रुंजय सार करे नित्यमेवी, तपगछ उपर हे वी ॥ श्री विजयसेन सूरीश्वर राया, श्री विजय दे व सूरी प्रणमी पाया, ऋषभदास गुण गाया ॥ ४ ॥

॥ अथ श्री शांतिजिन स्तुति लिख्यते ॥

शांतिकर शांतिजिन, जावरापुर धणी ॥ स यल जग जागती मूरति तुम तणी ॥रूप तुज नि रखतां, चित्त रीजे घणुं ॥ पामियें प्रणमतां, सु ख शिवपुर तणुं ॥ १ ॥ जिन तणा तीर्थ, ज ग मांहे छे जेटलां ॥ पंचवर कोटडी, पंच य वर भलां ॥ चंद्रप्रभ वासुपूज्य, शांतिजिन से लमा ॥ नमुं श्री पासने, वीर चोवीशमा ॥ २ ॥ योजन गामिनी, वाणी सुहामणी ॥ ते थुणी गणधरे, रचना कीधी घणी ॥ अंग इगीआ ने, चौद पूरव सुणी ॥ तेह थुणी हुं नमुं, मोक्ष साधन भणी ॥ ३ ॥ शासन सामिनी, शांति जिन सेविका ॥ संघ सान्निध्य करो, देवी नि

णिका ॥ साधुने साधवी, श्रावक श्राविका ॥ विघन तुम टालजो, पुण्य प्रनाविका ॥ ४ ॥

॥ अथ श्री पार्श्वनाथनी स्तुति लिख्यते ॥

प्रणमुं नित्य पास चिंतामणि, ॥ शोहे तस सप्त फणामणि ॥ तस महिमा मही मांहेज घणी, सुप्रसन्न सदा मुऊजगत धणी ॥ १ ॥ वंदूं हुं अतीत अनागता, वीश विहरमान चारे शाश्वता ॥ संपइ जिनवर सवि वंदियें. मन मोहन देखी आणंदीए ॥ २ ॥ नरपूरें गाजे मेहलो, सांनलतां अधिक स्नेहलो ॥ एवो आगम जिनवर नांखियो, सहु गणधर मिलि प्रकाशीयो ॥ ॥ ३ ॥ श्रीपास चरण सेवे सदा, जेहथी लहियें सुख संपदा ॥ दया कुशल कहेसो नगवइ, संघ विघन हरो पउमावइ ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ नवपदना आंबीलनी ओलीनी स्तुति ॥

वीरजिनेसर, नुवन दिणेसर, जगदीसर जयकारीजी ॥ श्रेणीक नरपति, आगल जंपे, सिद्धचक्र तप सारीजी ॥ समकित दृष्टि, त्रिकरण शुद्धें. जे नवियण आराधेजी ॥ श्री श्रीपाल नरिंदपरें तस, मंगल कमलावाधेजी ॥ १ ॥ अ

रिहंतविचे, सिद्ध सूरि पाठक, साहु चिहुंदिशि सोहेजी ॥ दंसण नाण, चरण तप विदिशें. एह नवपद मन मोहेजी ॥ आठ पांखडी, हृदयांबुज रोपी, लोपी रागने रीशजी ॥ ॐह्रीँपद, एकनी गणियें, नवकरवाली वीशजी ॥ २ ॥ आशो चैत्र शुदि सातमथी, मांडी शुभ मंमाणजी॥ नव निधि दायक नव नव आंबिल, इम एक्याशी प्रमाणजी ॥ देव वंदन पडिकमणुं पूजा, स्नात्र महोत्सव चंगजी ॥ एह विधि सघलो जिहां उपदेश्यो, प्रणमुं अंग उपांगजी ॥ ३ ॥ तप पूरे उजमणुं कीजें, लीजें नरभव लाहजी ॥ जिन गृह पडिमा सामी वत्सल, साधु भक्ति उत्साहजी ॥ विमलेसर चक्केसरी देवी, सान्निध्य कारी राजेजी ॥ श्री गुरु खिमाविजय सुपसयें, मुनिजिन महिमा छाजेजी ॥ ४ ॥ इति ।

॥ अथ सिद्धचक्रजीनी स्तुति लिख्यते ॥

जिनशासन वांछित, पूरण देव रसाल ॥ भावें भवि भणीए, सिद्धचक्र गुणमाल ॥ त्रीहुं काले एहनी, पूजा करे उजमाल ॥ ते अमर अमरपद, सुख पामे सुविशाल ॥ १ ॥ अरिहं

सिद्ध वंदो, आचारज उवझाय ॥ मुनि दरसण नाण. चरण तप ए समुदाय ॥ ए नवपद समुदित, सिद्ध चक्र सुखदाय ॥ ए ध्यानें नविनां, नव कोटी दुःख जाय ॥ २ ॥ आसो चइतरमां, शुद सातमथी सार ॥ पुनिम लगी कीजें, नव आंबिल निरधार ॥ दोय सहस गणेवुं, पद सम साढा चार ॥ एक्यासी आंबिल, तप आगम अनुसार ॥ ३ ॥ श्री सिद्धचक्र सेवक, श्री विमलेसर देव ॥ श्रीपाल तणीपरें, सुख पूरे स्वयमेव ॥ दुःख दोहग नावे, जेह करे एहनी सेव॥श्री सुमति सुगुरूनो, रामकहे नित्य मेव॥४॥

॥ अथ सिद्धचक्रजीनी स्तुति लिख्यते ॥

प्रह उठी वंदूं, सिद्धचक्र सदाय ॥ जपीए नवपदनो, जाप सदा सुख दाय ॥ विधि पूर्वक ए तप, जे करे थइ उजमाल ॥ ते सवि सुख पामें, जिम मयणा श्रीपाल ॥ १ ॥ मालवपति पुत्री, मयणा अति गुणवंत ॥ तस कर्म संयोगें, कोढी मिलीयो कंत ॥ गुरु वयणें तेणें, आराध्युं तप एह ॥ सुख संपद वरीआ, तरीआ नवजल तेह ॥ २ ॥ आंबिलने उपवास, छठ्ठ व

ली अठम दश ॥ अठ्ठाइ पंदर, मासी छमासी विशेष ॥ इत्यादिक तप बहु, सहु मांही शिर दार ॥ जे भवियण करशे, ते तरशे संसार ॥ ॥ ३ ॥ तप सान्निध्य करशे, श्री विमलेश्वर जक्ष ॥ सहु संघनां संकट, चूरे थइ प्रत्यक्ष ॥ पुंडरिक गणधार, कनक विजय बुध शीष्य ॥ बुध दर्शन विजय कहे, पोहोचे सहेल जगीस ॥ ४ ॥

॥ अथ पजूसणनी स्तुति लिख्यते ॥

पुण्यनुं पोषण, पापनुं शोषण, परव पजूसण पामीजी ॥ कल्प घरे पधरावो स्वामी, नारी कहे शिर नामीजी ॥ कुंअर गयवर खंध चढावी, ढोल निशान वजडावोजी ॥ सदगुरु संगें चढते रंगे, वीरचारित्र सुणावोजी ॥१॥ प्रथम वखाण धरम सारथि पद, बीजे सुपना चारजी ॥ त्रीजे सुपन पाठक वली चोथे, वीर-जनम अधिकारजी ॥ पंचमे दीक्षा छठ्ठे शिवपद, सातमे जिन त्रेवीशजी ॥ आठमे थिरावली संभलावी, पिउडा पूरो जगीशजी ॥ २ ॥ छठ्ठ अठम अठ्ठाइ कीजे, जिनवर चैत्य नमीजेंजी ॥ वरशी पडिक्कमणुं मुनिवंदन, संघ सयल खामीजेंजी ॥

आठ दिवस लगें अमर प्रवारनना, दान सुपा त्रे दीजेजी ॥ भद्रबाहु गुरु वयण सुणीने, ज्ञा न सुधारस पीजेंजी ॥ ३ ॥ तीरथमां विमलाच ल गिरिमां, मेरु महीधर नेमजी ॥ मुनिवर मां ही जिनवर मोहोटा, परव पजूसण तेमजी ॥ अ वसर पामी स्वामी वछल, बहु पकान्न वडा इजी ॥ खिमा विजय जिन देवी सिधाइ, दिन दिन अधिक वधाइजी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पंच तीर्थनी स्तुति लिख्यते ॥

श्री शत्रुंजय मुख्यतीर्थ तिलकं श्री नाभि राजागजं, वंदे रैवत शैल मौलिमुकुटं श्री नेमि नाथं यथा ॥ तारंगे अजितं जिनं भृगुपुरे श्री सुव्रतं स्थंभनें, श्रीपार्श्वं प्रणमामि सत्यनगरे श्री वर्द्धमानं त्रिधा ॥ १ ॥ वंदे ऽनुत्तर कल्प तल्प भुवने गैवेयक व्यंतरा, ज्योतिष्यामर मंदराद्रि वसती स्तीर्थंकरा नादरान् ॥ जंबू पुष्कर धात कीषु रुचके नंदीश्वरे कुंडले, येचाऽन्योपि जिना नमामि सततं तान् कृत्रिमाऽकृत्रिमान् ॥२॥ श्री महावीरजितास्यपद्म ह्रदतो निर्गम्यते गौतमं. गं गा वर्तन मेत्यया प्रविभिदे मिथ्यात्व वैताढ्यकं

॥ उत्पत्ति स्थिति संहृति त्रिपथगा ज्ञानांबुदा वृद्धिगा, सांमे कर्ममलं हरत्व विकलं श्री द्वाद शांगी नदी ॥ ३ ॥ शुक्र श्चंद्र रवि ग्रहाश्चधर ण ब्रह्मेंद्र शांत्यंबिका, दिग्पालाः सकपर्दि गो मुखगणि श्चक्रेश्वरी भारती ॥ येऽन्ये ज्ञान तपः क्रियाव्रतविधि श्री तीर्थ यात्रादिषु, श्रीसंघस्य तुरा चतुर्विध सुरास्ते संतु भद्रंकराः ॥ ४ ॥

॥ अथ श्री पर्युषण स्तुति लिख्यते ॥

पर्व पजूसण सर्व सजाइ, मेलवीने आराधो जी ॥ दान शील तप भावने भेली, सफल क रो भव लाधोजी ॥ तत्क्षण एह पर्वथी तरीयें, भवजल जेह अगाधोजी ॥ वीरने वांदी अधि क आणंदी, पूजी पुण्यें वाधोजी ॥ १ ॥ ऋष भ नेम श्रीपास परमेसर, वीर जिणेसर केरां जी ॥ पांच कल्याणक प्रेमें सुणीयें, वली आंत रा अनेराजी ॥ वीशे जिनवरना जे वारु, टले भवना फेराजी ॥ अतित अनागत जिनने न मियें, वली विशेषें भलेराजी ॥ २ ॥ दशाश्रुत सिद्धांत मांहेंथी, सूरिवर श्री भद्रबाहुजी ॥ क ल्पसूत्रए उद्धरी संघने, करी उपगार जे साहुजी

॥ जिनवर चारित्रने सामाचारी, थविरावली उ माहोजी ॥ जाणी एहनी आण जे वहेशे, लेशे ते भव लाहोजी ॥ ३ ॥ चउत्थ छठ्ठ अठ्ठम अ ठाइ, दश पंदरने त्रीशजी ॥ पीस्तालीशने शे ठ पंचोत्तर. इत्यादिक सुजगीशजी ॥ उपवास एता करी आराधे, पर्व पजूसण प्रेमजी ॥ शासन देवी विघन तसु वारे, उदय वाचक कहे एमजी॥४॥

॥ अथ वीशस्थानक तपनी स्तुति लिख्यते ॥

पूछे गौतम वीरजिणंदा, समवसरण बेठा सु खकंदा ॥ पूजित अमर सुरिंदा, केम निकाचे प द जिनचंदा ॥ किण विध तप करतां भव फं दा, टाले दुरितह दंदा ॥ तव भांखे प्रभुजी गत निंदा, सुण गौतम वसुभूति निंदा ॥ निर्मल तप अरविंदा, वीशस्थानक तप करत महिंदा॥ जिम तारक समुदाइ चंदा, तिम ए सवी तप इं दा ॥ १ ॥ प्रथम पदें अरिहंत नमीजें, बीजे सिद्ध पवयण पदभीजे ॥ आचारज थेर ठवीजें, उपाध्यायने साधु ग्रहीजें ॥ नाण दंसण पद वि नय वहीजें, इगीआरमे चारित्र लीजे ॥ बंभ वय धारीणं गणीजें, किरिआणं तवस्सकरीजे

॥ गोयम जिणाणं लहीजें, चारित्र नाण सुञ्च तिथ्थसकीजें ॥ त्रीजे नव तप करत सुणीजें, ए सांवे जिन तप लीजें ॥ २ ॥ आदि नमो प द संघले ठवीस, बार पन्नर बार वली छत्रीस ॥ दसपण वीस सगवीस, पांचने सम्सठ तेरे गणीस ॥ सत्तरे नव किरिआ पण वीस. बार अठावीस चौवीश ॥ सीत्तरे एकावन पीस्ताली श. पांच लोगस्स काउस्सग्ग रहीश ॥ नोकर वाली वीश, एक एक पदें उपवासज वीश ॥मा स षटें एक ओली करीश, इम सिद्धांत जगी श ॥ ३ ॥ शक्ति एकासणुं तिविहार, छठ अठ म मास खमण उदार ॥ पडिक्कमणां दोयवार, इत्यदिक विधि गुरुगम धार ॥ एकपद आरा धन नवपार, उजमणुं विविध प्रकार ॥ मातंग जक्ष करे मनोहार. देवी सिद्धाइ शासन रखवा ल ॥ संघ विघन अपहार, खिमाविजय जसउपर प्यार ॥ शुभ नवियण धरमी आधार, वीर विजय जयकार ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ शंखेश्वरजीनी स्तुति लिख्यते ॥

शंखेश्वर पासजी पूजीए, नरनवनो लाहो ली

जीए ॥ मनवंछित पूरण सुरतरु, जय वामासुत अलवेसरु ॥ १ ॥ दोय राता जिनवर अति न ला, दोय धोला जिनवर गुण नीला ॥ दोय नी ला दोय शामल कह्या, शोले जिन कंचन वर्ण लह्या ॥ २ ॥ आगम ते जिनवरें भाखिओ, ग णधर ते हियडे राखीओ ॥ तेहनो रस जेणें चाखी ओ, ते हुओ शिवसुख साखीओ ॥ ३ ॥ धर णीधर राय पद्मावती, प्रभु पार्श्व तणा गुण गा वती ॥ सहु संघनां संकट चूरती, नय विमल ना वांछित पूरती ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री पर्जूषण स्तुति लिख्यते ॥

पर्व पजूसण पुण्यें पामी, परिघल परमानं दोजी॥अति उछव आडंबर सघले, घर घर बहु आनंदोजी ॥ शासन अधिपति जिनवर वीरे, पर्व तणां फल दाख्यांजी ॥ अमार तणो ढंढेरो फेरी, पाप करतां राख्याजी ॥ १ ॥ मृगनयणी सुंदरी सुकुमाली, वचन वदे टंकशालीजी ॥ पू रो पनोता मनोरथ म्हारा, निरुपम पर्व निहा लीजी ॥ विविध जाति पक्वान्न करीने, संघ स यल संतोषोजी ॥ चोवीशे जिनवर पूजीने, पु

राय खजानो पोषोजी ॥ २ ॥ सकल सूत्र शिर मुकुट नगीनो, कल्प सूत्र जग जाणोजी ॥ वीर पास नेमीसर अंतर, आदि चारित्र वखाणोजी ॥ स्थविरावली ने सामाचारी, पटावली गुण गेहजी ॥ इम ए सूत्र सविस्तर सुणीने, सफल करो नरदेहजी ॥ ३ ॥ इणपरें पर्व पजूसण पाली, पाप सवे परहरियेजी ॥ संवछरी पडिक्कमणुं करतां, कल्याण कमला वरियेंजी ॥ गोमुख यक्ष चक्केसरी देवी, श्री माणिभद्र अंबाइजी ॥ शुभविजय कवि शिष्य अमरने, दिन दिन करजो वधाइजी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ नवतत्वनी स्तुति लिख्यते ॥

जीव अजीवा पुण्यने पापा, आश्रव संवर तत्ताजी ॥ सातमे निर्ज्जरा आठमे बंध, नवमे मोक्ष पद सत्ताजी ॥ ए नवे तत्ता समकेत सत्ता, भाखे श्री भगवंताजी ॥ भुज नयर मंडण रिसहेसर, वंदोने अरिहंताजी ॥ १ ॥ धम्मा धम्मागासा पुग्गल, समया पंच अजीवाजी ॥ नाण विनाण शुभाशुभ योगें, चेतन लक्षण जीवाजी ॥ इत्यादिक षट्द्रव्य परुपक, लोकालोक दिणं

दाजी ॥ अहवठी नित्य नमियें विधिशुं, सित्तरि सो जिन चंदाजी ॥ २ ॥ सूक्ष्म बादर दोए ए केंद्री, बि ति चउरिंदि दुविहाजी ॥ तिविहा पंचिं दि पजत्ता, अपजत्ता ते विविहाजी ॥ संसारी असंसारी सिद्धा, निश्चयने व्यवहाराजी ॥ पन्नव णादिक आगम सुणतां, लहियें शुद्ध विचाराजी ॥ ३ ॥ भुवनपति व्यंतर ज्योतिषवर, वैमानि क सुरवृंदाजी ॥ भुज नगर महिमंडल सघले, संघ सकल सुख करजोजी ॥ पंमित मानविजय इम जंपे, समकित गुण चित्त धरजोजी ॥ ४ ॥

॥ अथ गौतम स्वामीनी स्तुति लिख्यते ॥

गुरु गणपति गाउं गौतम ध्यान ध्याउं, स वि सुकृत सुबाहु विश्वमां पूज्य थाउं ॥ जगजी त वजाउं कर्मने पारजाउं, नवनिधि रिद्धि पा उं शुद्ध समकित ठाउं ॥ १ ॥ सावि जिनवर केरा साधु मांही वडेरा, दुगवन अधिकेरा चउद स याशुं भलेरा ॥ दल्यां दुरित अंधेरां वंदीए ते सवेरा, गणधर गुण घेरां नाम छे जेह मेरा ॥ ॥ २ ॥ सावि संशय कापे जैन चारित्र छापे, त व त्रिपदी आपे शीस सौभाग्य व्यापे ॥ गण

धर पद थापे द्वादशांगी समापे, नवदुःखने संता पे दासने इष्ट आपे ॥ ३ ॥ करे जिनवर सेवा जेह इंद्रादि देवा, समकित गुण मेवा आपता नित्य सेवा ॥ भवजल निधि तरेवा नौसमी ती र्थसेवा, ज्ञान विमल लहेवा लील लछीवरेवा॥४॥

॥ अथ दीवालीनी स्तुति लिख्यते ॥

इंद्रभूति अनुपम गुण भर्या, जे गौतम गोत्रें अलंकर्या ॥ पंचशत छात्रशुं परवर्या, वीर चरण लही भवजल तर्या ॥ १ ॥ चउ अठ दस दोय जिनने स्तवे, दक्षिण पश्चिम उत्तर पूर्वे ॥ संभव आदि अष्टापद गिरिए व ली, जे गौतम वंदे हुन हुली ॥ २ ॥ त्रिपदि पामीने जेणेंकरी, द्वादशांगी सकल गुणें भरी ॥ दीये दीख ते लहे केवल सिरी, ते गौतमने र हुं अनुसरी ॥ ३ ॥ जक्ष मातंग सिद्धाइका, सू रि शासननी प्रभाविका ॥ श्री ज्ञान विमल दीप मालिका, करो नित्य नित्य मंगल मालिका॥४॥

॥ अथ श्री नेमिनाथजीनी स्तुति लिख्यते ॥

दुरित भय निवारं, मोह विध्वंसकारं ॥ गु णवंत मविकारं, प्राप्तसिद्धि मुदारं ॥ जिनवर ज

यकारं, कर्म संक्लेशहारं ॥ नवजल निधि तारं, नौमि नेमी कुमारं ॥ १ ॥ अड जिनवर माता, सिद्धि सौधे प्रयाता ॥ अड जिनवर माता, स्वर्ग त्रीजे विख्याता ॥ अड जिनवर माता, प्राप्त माहेंद्र स्थाता ॥ नव नय जिन त्राता, संतने सिद्धि दाता ॥ २ ॥ ऋषभ जनक जावे, नाग स्वभाव पावे ॥ ईशान सग्ग कहावे, सेस कांता सुभावे ॥ पद्मासन सुहावे, नेम आद्यंतपावे ॥ सेस काउस्सग्ग भावे, सिद्धि सूत्रें पठावे ॥३॥ वाहन पुरुषजाणी, कृष्ण वर्णे प्रमाणी ॥ गोमेधने षटपाणी, सिंह बेठी वराणी ॥ तनु कनक समाणी, अंबिका चार पाणी ॥ नेम भगति भराणी, वीर विजेयें वखाणी ॥ ४ ॥ इ ति ॥

॥ अथ श्री पार्श्वनाथजीनी स्तुति लिख्यते ॥

पासजिणंदा वामानंदा, जब गरभें फूली ॥ ॥ सुपनां देखे अर्थ विसेखें, कहे मधवा मिली ॥ ॥ जिनवर जाया सुर हुलराया, हुआ रमणी प्रिये ॥ नेमिराजी चित्त विराजी, विलोकित व्रत लीए ॥ वीर एकाकी चार हजारें, दीक्षा धुर जिनपति ॥ पासने मल्लित्रय शतसाथें, बीजा स

हसें व्रती ॥ खटशत साथें संजम धरता, वासु पूज्य जगधणी ॥ अनुपम लीला ज्ञान रसीला, देजो मुजने घणी ॥ २ ॥ जिन मुख दीठी वाणी मीठी, सुरतरु वेलडी ॥ द्राख विहासे गइ वनवासे, पीले रस सेलडी ॥ शाकर सेती तरणांलेती, मुखें पशु चावती ॥ अमृत मीठुं स्वर्गें दीठुं, सुरवधू गावती ॥ ३ ॥ गज मुख दक्षो वामन जक्षो, मस्तकें फणावली ॥ चार ते बांही कच्छपवाही, कायाजस शामली ॥ चउकर प्रौढा नागारुढा देवी पद्मावती ॥ सोवन कांति प्रभु गुण गाती, वीर घेरे आवती ॥ ४॥ इति ॥

॥ अथ श्री वीरजिननी स्तुति लिख्यते ॥

महावीर जिणंदा राय सिद्धार्थनंदा ॥ लंछन मरगंदा जासपाये सोहंदा ॥ सुर नरवर इंदा नित्य सेवा करंदा ॥ टाले भव फंदा सुख आपे अमंदा ॥ १ ॥ अड जिनवर माता मोक्षमां सुख शाता ॥ अड जिननीख्याता स्वर्ग त्रीजे आख्याता ॥ अड जिन पजनेता नाक मांहेंद्र याता ॥ सवि जिनवर नेता शाश्वता सुख दाता ॥ २ ॥ मल्लिनेमी पास आदी अठम बास ॥ करी एक

उपवास वासुपूज्यसु वास ॥ सेख ग्छ सुविला स केवल ज्ञान जास ॥ करे वाणी प्रकाश जेम अज्ञान नाश ॥ ३ ॥ जिनवर जगदीस जास मीहोटी जगीस ॥ नहीं राग ने रीश नामीए तास शीश ॥ मातंग सुर इश सेवतो रात दीस ॥ गुरु उत्तम अधीस पद्म भाखे सुसीष्य ॥ ४ ॥

॥ अथ बीज तिथीनी स्तुति लिख्यते ॥

दिन सकल मनोहर, बीज दिवस सुविशेष ॥ रायराणा प्रणमें, चंद्रतणी ज्यां रेख ॥ तिहां चंद्र विमानें, शाश्वत जिनवर जेह ॥ हुं बीज तणे दिन, प्रणमुं आणी नेह ॥ १ ॥ अभिनंदन चंदन, शीतल शीतलनाथ ॥ अरनाथ सुमति जिन, वासुपूज्य शिव साथ ॥ इत्यादिक जिनवर, जन्म ज्ञान निरवाण ॥ हुं बीज तणे दिन, प्रणमुं ते सुविहाण ॥ २ ॥ प्रकाश्यो बीजे, दुविध धर्म भगवंत ॥ जिम विमल कमल दोय, विपुल नयन विकसंत ॥ आगम अति अनुपम, जिहां निश्चे व्यवहार ॥ बीजें सविकीजें, पातकनो परिहार ॥ ३ ॥ गजगामिनी कामिनी, कमल सुकोमल चीर ॥ चक्केसरी केसरी, स

रस सुगंध शरीर ॥ करजोमी बीजे, हुं प्रण मुं तस पाय ॥ इम लब्धि विजय कहे, पूर मनोरथ माय ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पंचमीनी स्तुति लिख्यते ॥

श्रावण शुदि दिन पंचमीए, जनम्या नेम जिणंदतो ॥ श्याम वरण तनु शोनतुंए, मुख शारदको चंदतो ॥ सहस वरस प्रनु आयुखो ए, ब्रह्मचारि नगवंत तो ॥ अष्ट करम हेले ह णिए, पोहोता मुक्ति महंततो ॥ १ ॥ अष्टापद आदि जिन ए, पहोता मुक्ति मझारतो ॥ वासु पूज्य चंपापुरीए, नेम मुक्ति गिरनार तो ॥ पा वापुरी नगरीमां वलीए, श्री वीरतणुं निर्वाणतो ॥ समेत शिखर वीश सिद्ध हुआए, शिर वहुं तेहनी आणतो ॥ २ ॥ नेमनाथ ज्ञानी हुवाए, नाखे सार वचनतो ॥ जीव दया गुण वेलडी ए, कीजे तास जतन तो ॥ मृषा न बोलो मानवी ए, चोरी चित्त निवारतो ॥ अनंत तीर्थंकर इम कहेए, परहरिए परनार तो ॥ ३ ॥ गोमेदना में जक्ष नलोए, देवी श्री अंबिका नामतो ॥ शासन सान्निध्य जे करेए, करे वलि धर्मनां का

मतो ॥ तप गछ नायक गुण निलोए, श्री विजयसेन सूरिरायतो ॥ ऋषभदास पाय सेवताए, सफल करो अवतारतो ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ अष्टमीनी स्तुति लिख्यते ॥

मंगल आठ करी जस आगल, भावधरी सुरराजजी ॥ आठ जातना कलश करीने, न्हवरावे जिनराजजी ॥ वीर जिनेश्वर जन्म महोत्सव, करतां शिव सुख साधेजी ॥ आठमनुं तप करतां अमघरे, मंगल कमला वाधेजी ॥ १ ॥ अष्ट करम वयरी गज गंजन, अष्टापद परें बलीयाजी ॥ आठमें आठ सरूप विचारी, मद आठे तस गलीयाजी ॥ अष्टमी गति पहोता जे जिनवर, फरस आठ नहिं अंगजी ॥ आठमनुं तप करतां अमघर, नित्य नित्य वाधे रंगजी ॥ २ ॥ प्रातिहारज आठ विराजे, समवसरण जिनराजेजी ॥ आठमे आठसो आगम भाखी, भवि मन संशय भांजेजी ॥ आठे जे प्रवचननी माता, पाले निरति चारोजी ॥ आठमने दिन अष्ट प्रकारी, जीवदया चित्त धारोजी ॥ ३ ॥ अष्ट प्रकारे पूजा करीने, मानव भव फ

ल लीजेंजी ॥ सिद्धाइ देवी जिनवर सेवी, अष्ट महासिद्धि दीजेंजी ॥ आठमनुं तप करतां लीजे, निर्मल केवल ज्ञानजी ॥ धीर विमल कवि सेवक नय कहे, तपथी कोड कल्याणजी ॥ ४ ॥

॥ अथ संसार दावानी स्तुति लिख्यते ॥

संसार दावानल दाहनीरं, संमोहधूली हरणे समीरं ॥ माया रसादारण सारसीरं, नमामि वीरं गिरिसार धीरं ॥ १ ॥ भावावनाम सुर दानव मानवेन, चूला विलोल कमला वलि मालितानि ॥ संपूरिता भिनत लोक समीहितानि, कामं नमामि जिनराज पदानि तानि ॥ २ ॥ बोधागाधं सुपदपदवी नीर पूराभिरामं, जीवाहिंसा विरल लहरी संगमा गाहदेहं ॥ चूलावेलं गुरुगम मणीसंकुलं दूरपारं, सारं वीरागम जलनिधिं सादरं साधु सेवे ॥ ३ ॥ आमूला लोल धुली बहुल परिमला लीढलोलालिमाला, झंकारा रावसारा मलदल कमला गारभूमी निवासे ॥ छाया संभारसारे वरकमलकरे तारहाराभिरामे, वाणी संदोह देहे भव विरह वरं देहि मे देवीसारं ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धचक्रनी स्तुति लिख्यते ॥

अरिहंत नमो वली सिद्ध नमो, आचार्य वाचक साहु नमो ॥ दर्शन ज्ञान चारित्र नमो, तप ए सिद्धचक्र सदा प्रणमो ॥ १ ॥ अरिहंत अनंत थया थाशे, वली जाव निख्खेपे गुण गाशे ॥ पडिक्कमणा देव वंदन विधिशुं, आंबिल तप गणणुं गणो विधिशुं ॥ २ ॥ छरिपालीजे तप करशे, श्रीपाल तणी परें जव तरशे ॥ सिद्धचक्रने कुणआवे तोले, एवा जिन आगम गुण बोले ॥ ३ ॥ साढा चार वरसें तप पूरुं, ए कर्म विदारण तप शूरुं ॥ सिद्धचक्र मन मंदिर थापो, नय विमलेसर वर आपो ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ रोहिणी तपनी स्तुति लिख्यते ॥

नक्षत्र रोहिणी जे दिन आवे, अहोरत्त पोषध करी शुन जावे, चउ विहार मनलावे ॥ वासुपूज्यनी जक्ति कीजें, गणणुं पण तस नाम जपीजें, वरष सत्तावीस लीजे ॥ थोडी सक्ते वरस ते सात, जावजीव अथवा विख्यात, तप करी करो कर्मघात ॥ निज शक्ति उजमणुं आवे, वासुपूज्यनुं बिंब जरावे, लाल मणिमय ठावे

॥ १ ॥ इम अतीत अने वर्तमान, अनागत वंदो जिन बहुमान, कीजें तस गुण गान ॥ तक्ककारकूनी नक्ति आदरिए, साधर्मिक वली संघनी करीए, धरम करी नव तरीए ॥ रोग सोग रोहिणी तपें जाए, संकट टले तस जश बहुथाए, तस सुरनर गुण गाए ॥ नीराशंसप णे तप एह, शंका रहित पणे करो तेह, निधि नव होए जिम गेह ॥ २ ॥ उपधान स्थानक जिन कल्याण, सिद्धचक्र शत्रुंजय जाण, पंचमी तप मन आण ॥ पम्मिा तप रोहिणी सुखकार, कनकावली रत्नावली सार, मुक्तावली मनोहार ॥ आठम चजदशने वर्धमान, इत्यादिक तप मांहे प्रधान, रोहिणी तप बहुमान ॥ इणिपरें नाखे जिनवर वाणी, देशना मीठी अमीए समाणी, सूत्रें तेह गुंथाणी ॥ ३ ॥ चंमा यक्कणी यक्ककुमार, वासुपूज्य शासन सुखकार, विघ्न मिटावण हार ॥ रोहिणी तप करतां जन जेह, एह नव परनव सुख लहे तेह, अनुक्रमें नवनो बेह ॥ आचारी पंडित उपगारी, सत्य वचन नाखे सुखकारी, कपूर विजय व्रतधारी ॥

खिमाविजय शिष्य जिन गुरुराय, तस शिष्य मुज गुरु उत्तम थाय, पद्म विजय गुण गाय ॥ ४ ॥

॥ अथ पजूसणनी स्तुति लिख्यते ॥

सत्तरे भेदी जिन पूजा रचीने, स्नात्रे महोछव कीजेंजी ॥ ढोल दमामा भेरी नफेरी, झाल री नाद सुणीजेंजी ॥ वीर जिन आगें भावना भावी, मानव भव फल लीजेजी ॥ परव पजूसण पूरव पुण्यें, आव्यां इम जाणीजेंजी ॥ १ ॥ मास पास वली दसम दुवादस, चत्तारी अठ कीजेंजी ॥ उपर वली दस दोय करीने, जिन चोवीसे पूजीजेंजी ॥ वडा कल्पनो छठ्ठ करीने, वीर चरित्र सुणीजेंजी ॥ पडवाने दिन जन्म महोछव, धवल मंगल वरतीजेंजी ॥ २ ॥ आठ दिवस लगें अमर पलावी, अठ्ठमनुं तप कीजेजी ॥ नागकेतुनी परें केवल लहीए, जो शुभ भावे रहीएजी ॥ तेलाधर दिन त्रण कल्याणक, गणधर वाद वदीजेंजी ॥ पास नेमीसर अंतर त्रीजे, ऋषभ चरित्र सुणीजेंजी ॥ ३ ॥ बारेशें सूत्रने समाचारी, संवछरी खामीजेंजी ॥ पारणाने दिन स्वामी वछल, कीजें अधिक व

डाइजी ॥ मान विजय कहे सकल मनोरथ, पूरे देवी सिद्धाइजी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ शंखेश्वर पार्श्वजिन स्तुति लिख्यते ॥

कल्याण कारक, दुःख निवारक, सकल सुख आवास ॥ संसार तारक, मदन मारक, श्री संखेसर पास ॥ अश्वसेन नंदन, भवि आनंदन, विश्ववंदन देव ॥ भवभित भंजन, कमठ गंजन, नमीजें नित्य मेव ॥ १ ॥ त्रयलोक दीपक, मोहजीपक, शिव सरोवर हंस ॥ मुनिध्यान मंडन, दुरित खंडन, भुवनशिर अवतंस॥द्रव्यभाव थापन नाम भेदी, जस निखेपा चार॥ते देवदेवा, मुक्ति लेवा, नमो नित्य सुखकार॥ २ ॥ षट द्रव्यगुण, परजाय नयगम, भेद विसद वखाणी॥ संसार पारावार तरणी, कुमति कंद कृपाणी ॥ मिथ्यात भूधर.शिखर भेदन, वन सम जे जाणी॥ अतिभगति आणी, भवि प्राणी, सुणो ते जिनवाणी ॥ ३ ॥ जशवदन सारद चंद सुंदर, सुधासदन विशाल॥ निकलंक सकल कलंक तम हर, अंग अति सुकुमाल॥ पद्मावती सा भगवती सवि, विघ्न हरण सुजाणी॥ श्री संघने, क

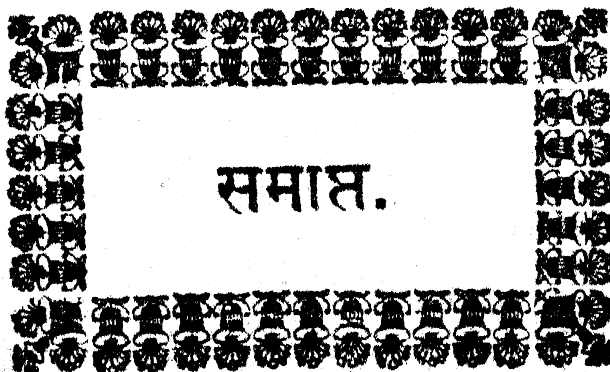
ल्याण करणी, हंस कहे चित्त आणी ॥ ४ ॥

॥ अथ श्री पार्श्वजिन स्तुति लिख्यते ॥

जग जन भजन मांहें जे भलियो. जोगीसर ध्यानें जे कलीयो, शिववधु संगें हलियो ॥ अखिल ब्रह्मांडें जे जल हलियो, षट दर्शन मतें नावि खलीयो. बलवंत मांहें बलीयो ॥ ज्ञान महो दय गुण उछलीयो. मोह महाभट जेणें गलीयो. काम सुभट निर्दलीयो ॥ अजर अमर पद भारें रलीयो. सो प्रभु पास जिनेसर मिलीयो, आज मनोरथ फलीयो ॥ १ ॥ मुक्ति महा मंदिरना वासी. अध्यातम पदना उपासी, आनंद रूप विलासी ॥ अलख अगोचर जे अविनाशी. साधु शिरोमणि महा संन्यासी, लोकालोक प्रकाशी ॥ जग सघले जेहनी ठबासी. जीवायोनि लाख चोरासी. तेहना पास निकासी ॥ जलहल केवल ज्योतिकी आसी. अथिर सुखना जे नहीं आसी. वंदुं तेहने उल्लासी ॥ २ ॥ श्री जिन भाषित प्रवचन माला. भविजन कंठें धरो सुकुमाला, मेहेली आल पंपाला ॥ मुक्ति वरवाने वरमाला, वारु वर्ण ते कुसुम रसाला, ग

णधरें गुंथी विशाला ॥ मुनिवर मधुकर रूप मयाला, जोगी तेहना वली नृपाला, सुरनर कोमी रढाला ॥ जे नर चतुर अने वाचाला, परिमल ते पामे विगताला, नांजे नव जंजाला ॥ ३ ॥ नाग नागिणी अध बलता जाणी, करुणा सागर करुणा आणी, तत्क्षण काढया ताणी ॥ नवकार मंत्र दीयो गुणखाणी, धरणीधर पद्मावती राणी, थया धणी धणीयाणी ॥ पास पसायें पद परमाणी, सा पद्मा जिनपदें लपटाणी, विघ्न हरण सपराणी ॥ खेडा हरियाला मां शुन्न ठाणि, पूजो पास जिणंद नविप्राणि, उदय वदे इम वाणी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ इति जैन स्तुति संग्रह समाप्तः ॥



जैनधर्म संबंधी गपेला पुस्तकोनुं सूचीपत्र.

१ श्री जैन धर्म ध्यान प्रदिपक पुस्तक किमत १॥ रुपया.
२ जैन धर्म सिद्धांतसार पुस्तक किमत १। रुपया.
३ श्री जैन धर्म ज्ञान प्रकाश पुस्तक किमत १२ आणें.
४ श्री रामलक्ष्मण चरित्र कथा युक्त किमत १। रुपया.
५ चंद्रराजाको रास किमत १ रुपया
६ लक्ष्मण बोध नाटक किमत १२ आणा.
७ श्रीपाल राजाकोरास चार खंडको किमत १० आणें.
८ अंजनाको तथा राणी पद्मावतीको रास किमत ६ आणें.
९ मानतुंग मानवतीकोरास किमत ०६ आणें.
१०हंसराज बछराजको रास किमत ५ आणें.
११सतधारी राजा हरीचंदकी चोपाई किमत ४ आणें.
१२धन्ना साळभद्र शेठकी चोपाई किमत ४ आणें
१३मंगळ कळमकी चोपाई किमत ४ आणें.
१४देवकी राणीको रास (छे भाइनो रास) किं० ४आणें.
१५लिलावती राणीकी चोपाई किमत ४ आणें.
१६अमरसेन जयसेन राजाकी चोपाई किमत ४ आणें.
१७चंदन मलीयागीरीकी चोपाई किमत ४ आणें.
१८परदेशी राजाको रास किमत ४ आणें.
१९कयवन्ना शाहको रास किमत ०४ आणे.
२०महिपती राजा अने मतिसागर प्रधानकी चोपाई किमत ४ आणें
२१कानड कठीयाराकी चोपाई कर्म बंध रास किमत ०४ आणें.
२२स्नात्र पूजा तथा वीस थानकनी पूजा किमत ४ आणें.
२३स्तवन सज्झाय संग्रह प्रत्येक भाग किमत ४आणें
२४मेणरहयानी चोपाई किमत ३ आणें.
२५पांचपदारी मोठी वंदना किमत ३ आणें.
२६पंडित देवचंद्रजीमहाराजकृत चोवीसी किमत १॥ आना.
२७पंडित आनंदघनजी कृत चोवीसी किमत १॥ आना
२८श्री जैन काव्यमाला [आठ भाग] किमत १ रुपया.